वर्ष-११ अंक-०९ २७ मई २०१४

ओ३म्

# वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

# मानव कल्याणार्थ
## आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्धेश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-११ अंक-०९

२७ मई २०१४
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

| | |
|---|---|
| आवरण पृष्ठ २ एवं ३ | ५०० रू. |
| पूर्ण पृष्ठ (अंदर) | -४००रू |
| आधा पृष्ठ (अंदर का) | २५० रू. |
| चौथाई पृष्ठ | १५० रु |

## अनुक्रमणिका

| | |
|---|---|
| संपादकीय | 2 |
| कर्म–फल सिद्धांत | 4 |
| पं. मोतीलाल नेहरू, गायत्री मंत्र... | 5 |
| अथर्ववेद की सूक्तियाँ | 7 |
| "वेद सुधा" | 8 |
| प्रलय की प्रतीक्षा | 10 |
| चिन्ता का ईलाज | 12 |
| सच्चे गुरु की पहचान | 14 |
| बाल संदेश | 16 |
| समाचार | 19 |
| आर्य युवक–युवती सम्मेलन | 23 |

## जून माह के दिवस, पर्व व त्यौहार

| | |
|---|---|
| 1 | बाल सुरक्षा दिवस |
| 5 | विश्व पर्यावरण दिवस |
| 8 | गायत्री जयंती |
| 9 | बिरसा मुण्डा शहीद दिवस |
| 13 | कबीर जयंती, उधम सिंह शहीद दिवस |
| 18 | महारानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस |
| 24 | रानी दुर्गावती बलिदान दिवस |
| 26 | अंतर्राष्ट्रीय नशा विरोध दिवस |

सम्पादकीय –

## प्रजातन्त्र का एकपक्षीय स्वरूप

प्रजातन्त्र हर भारतीय के जीवन से संबंध रखता है। वह इसलिए क्योंकि उसकी जीवन पद्धति एक प्रजातन्त्रीय देश से संबंध रखती है। प्रजातन्त्र (Democracy) पीछे बनी मूल भावना का प्रत्येक भारतीय के लिए बड़ा महत्व है। जन साधारण को संतुष्टि और गौरव प्रदान करने वाला है। संविधान निर्माताओं ने इसी बात को संविधान के कई अनुच्छेदों में बहुत जोर–शोर से बताया है।

यदि शब्द और उसकी भावना के अनुसार जन सामान्य का व्यवहार बन जावे तो रामराज्य के लिए अलग से प्रयास करने की आवश्यकता ही नहीं। सर्वे भवन्तु सुखिनः का सन्देश सार्थक हो सकता है यदि प्रजातन्त्र का समुचित अर्थ व महत्व समझते हुए उसे अमल में लाया जावे तो ?

थोड़ा विचार तो करें कितनी अच्छी व्यवस्था है, इस प्रजातन्त्रीय प्रणाली की, जिसके अनुसार हम ही शासक, हम ही प्रजा, हम देश के, देश हमारा, हम देश के लिए देश हमारे लिए। संक्षेप में गणतन्त्र को समझाने के लिए कहा गया, जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा। इस भावना को ऊपर वर्णित पंक्तियां मूल रूप को दर्शाती हैं।

गंभीरता से सोचें तो हमारी व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन प्रणाली कैसी हो इसका निर्धारण हमें करने की स्वतन्त्रता है। देश को, समाज को व्यवस्थित कैसे रखा जावे वे सीमाएं और स्वतन्त्रता बनाने का हमें ही अधिकार राष्ट्र के संचालन में किसे बैठाना, किसे हटाना, इसका अधिकार भी हमें प्राप्त। अपनी योग्यता के अनुसार उन्नति कर कोई भी पद प्राप्त करने का संवैधानिक अधिकार हमें प्राप्त। हमें से तात्पर्य प्रत्येक भारतीय जिसे स्वतन्त्र भारत का नागरिक कहलाने का संवैधानिक अधिकार है। यह सब प्राप्त करने के लिए तो अनेक शहादतें हुई उस बन्धन की जंजीर को तोड़ने के लिए बड़ी कुर्बानी हुई।

किन्तु क्या इस श्रेष्ठतम व्यवस्था को देश संचालन में आत्मसात किया है ?

संभवतः प्रत्येक पाठक का उत्तर नकारात्मक ही होगा, होना भी चाहिए, क्योंकि सब व्यवस्थाएं यथार्तता से विमुख हो रही हैं। परिणाम न तो सही है न संतोषजनक है। प्रजातन्त्र के नाम पर असफल प्रशासनिक व जनोपयोगी व्यवस्था प्रजातन्त्र शब्द का उपहास बनकर रह गई। आम आदमी को आज लगने लगा कि यदि यही ऐसा ही प्रजातन्त्र है, तो नहीं चाहिये ऐसा प्रजातन्त्र।

शोषण, मानसिक परतन्त्रता, अभाव, भय, अशान्ति, आपसी मतभेदों में जीता हुआ मानव प्रजातन्त्र को अच्छा कहे या बुरा कहे, यह विडम्बना उसके सामने हैं।

हर कोई किसी न किसी रूप में अव्यवस्थाओं का शिकार हो रहा है। समाज गंभीर बीमारी की ओर बढ़ रहा है किन्तु उपचार करने का किसी का विचार ही नहीं है। बीच–बीच में कभी–कभी कोई समाज के दर्द को लेकर चिन्ता करता है, प्रयास करता है। गफलत और नशे में धुत सोये हुओ को जगाने का प्रयास करता है किन्तु न तो समाज उसे सहयोग देता है न समझ पाता है। फिर वह आवाज कमजोर, ध ीमी और लुप्त हो जाती है।

आखिर कब आएगा होश, आशियाना ज़ल जाने के बाद ! तभी तो सिर छिपाने के लिए कुछ तो करना होगा। बहुत कुछ नष्ट हो चुका परन्तु जो बचा है उसे बचा लेना ही समझदारी है।

प्रजातन्त्र को समझकर अपने अधिकार व कर्तव्यों के प्रति सतर्कता रखना। न अपने अधिकारों पर अतिक्रमण करने दें और न किसी के अधिकारों पर स्वयं अतिक्रमण करें, यही मूल प्रजातन्त्रीय प्रणाली का है।

अपने अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग कर रक्षा, निर्माण, उन्नति हो सकती है इनकी उपेक्षा करके तो दूसरों के हाथ लुटने को अवसर देना होता है।

यही आज समाज में हो रहा है प्रजातन्त्र चन्द हाथों में कैद है होकर उनकी कठपुतली बना हुआ है। परन्तु 16 वीं लोकसभा के लिए किए गए मतदान में ऐसा लगा कि समाज अपने अधिकारों का महत्व समझ रहा है। प्रजातन्त्र में उसकी स्थिति मात्र मोहताज तक नहीं अपितु शीर्षस्थ राष्ट्र ताज तक भी है। मतदान का इतना अधिक प्रतिशत, आरोप–प्रत्यारोप, लुभावने प्रभाव से मुक्त एक ठोस विचारध ारा का चयन, यह सबकुछ सुखद है।

आवश्यकता है प्रजातन्त्र को उसकी सही पहचान दिलाने के लिए राष्ट्र के नागरिकों की सही व स्वतन्त्र विचार शक्ति।

**राजानः सत्यं गृह्णानाः।** अथर्व 5.17.10
राजा सत्य का पालन करते हैं।

**वशा माता राजन्यस्य।** अथर्व 12.4.33
गाय क्षत्रिय राजा की माता के तुल्य है।

# कर्म–फल सिद्धान्त

## जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल पाने में परतन्त्र –

– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

**प्रश्न –** जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल पाने में परतन्त्र है, इसका क्या अर्थ है।

**उत्तर –** इसका अर्थ यह है कि किसी काम के करने में जीव की पूर्ण अधिकार है कि उसे करे, या न करे या उलटा करे। मैं बोलूं या न बोलूं या अपशब्द बोलूं। इन तीनों बातों का मुझे अधिकार है, परन्तु जब बोल चुका तो काम हो चुका। परिस्थिति मेरे हाथ से निकल गई। उसका परिणाम मुझे भोगना पड़ेगा। यदि मुझे कोई बात कहनी चाहिये थी और मैं समय आने पर चुप रहा तो भी मुझे हानि भोगनी पड़ेगी। यदि मैं झूठ बोला या किसी को गाली दे दी तो उसका भी दुष्परिणाम भोगने में मैं परतन्त्र हूं। काम की पूर्ति के पहले तो मेरा अधिकार था। अब जगत के व्यवस्थापक के हाथ में चला गया मैं सर्वथा परतन्त्र हूं। गीता में यही कहा है कि –

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**
**मा कर्म–फलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।**

अर्थात् – मनुष्य का कर्म करने का अधिकार है। कर्म ज्यों ही समाप्त हुआ, उसका फल कर्म करने वाले के हाथ से निकल ईश्वर की व्यवस्था का अंग बन जाता है। आपको अधिकार है कि आप आम बोवें या जामुन परन्तु जब आप बो चुके तो जगत् नियन्ता की व्यवस्थानुसार आम के बीज से आम के ही अंकुर, आम के ही पत्ते, आम के ही फूल और आम के ही फल निकलेगें, जामुन के नहीं। आप तो काम करने के पश्चात ही परतन्त्र हो जाते हैं। अतः आपको चिन्ता उसी समय तक करनी है, जब तक काम समाप्त नहीं हुआ। उसके पश्चात कर्मफल की चिन्ता व्यर्थ है। आम का बीज बोकर बीज में जामुन के पत्तों की इच्छा निरर्थक है। इसलिये न तो कर्म--त्याग से काम चलता है और न कर्म के पश्चात फल की चिन्ता से। **कर्तव्य का न करना भी अशुभ है और उलटा करना भी अशुभ।**

प्रश्न – मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र तो नहीं है। जगत के बनाने वाले ने मनुष्य को परिस्थितियों से इतना जकड दिया है कि उनके विरूद्ध मनुष्य कुछ कर ही नहीं सकता। अतः मनुष्य को स्वतन्त्र कहना मिथ्या है। हमको व्यर्थ ही स्वतन्त्र कह कर हमारे कर्मो के लिये दण्ड दिया जाता है। मनुष्य प्रपंच के हाथ में खिलौना है। हम दैव के हाथ की कठपुतली हैं। वह जैसे चाहे नाच नचावें।

# पं. मोतीलाल नेहरू, गायत्री मन्त्र और महर्षि दयानन्द

– पं. मनुदेव अभय "विद्यावचस्पति"

गायत्री मन्त्र को महामन्त्र कहा जाता है, परमात्मा के स्वरूप को दर्शाते हुए इसमें उत्तम बुद्धि की कामना की गई है। सबसे श्रेष्ठ व बड़ा बल बुद्धिबल होता है, इसीलिए इस मन्त्र को महामन्त्र कहा जाता है।

महर्षि दयानन्द के द्वारा सर्वप्रथम इस मन्त्र को जातिवर्ग के भेदभाव से हटकर प्राणीमात्र को इसे सुनने, बोलने का अधिकार प्रदान कर एक महान कार्य किया। इसके पूर्व गायत्री मन्त्र जिसे गुरू मन्त्र कहा जाता था, जो सुनने व बोलने का अधिकार एक वर्ग तक सीमित था।

दिवंगत पं. मनुदेव अभय "विद्यावाचस्पति" द्वारा पंडित मोतीलाल नेहरू व गायत्री मन्त्र के सन्दर्भ में लिखा गया लेख प्रस्तुत है।

महर्षि दयानन्द ने गायत्री मन्त्र सबको सिखाया करते थे। संस्कारविधि में महर्षि दयानन्द लिखते हैं – सन्यस्त होने के पश्चात स्वाध्याय निरन्तर होता रहना चाहिए। ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि में प्रमाद न हो तथा स्वाध्याय में अनाध्याय न हो। इन समस्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि महर्षि दयानन्द और उनके गुरू विरजानन्द गायत्री मन्त्र पर अगाध श्रद्धा रख सबको गायत्री मन्त्र का जाप करने का उपदेश दिया करते थे। उनके इस कार्य का सटीक उदाहरण इस प्रकार है –

जिन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल कांगड़ी के सर्वेसर्वा थे, तब एक बार गुरूकुल के वार्षिकोत्सव पर उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू के पिता श्री पंडित मोतीलाल नेहरू को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया। पं. मोतीलालजी नेहरू ने अपनी स्वीकृति दे दी तथा निश्चित समय पर गुरूकुल पधार गये। निर्धारित कार्यकम के अनुसार उन्हें मंच पर व्याख्यान के लिए आहूत किया गया। उन दिनों गुरूकुल कांगड़ी का उत्सव जन आकर्षण का केन्द्र होता था। सभा में बहुत बड़ी संख्या श्रोताओं की थी। माननीय प्रमुख वक्ता पं. मोतीलाल नेहरू ने मंच पर खड़े होकर सर्वप्रथम गायत्री मन्त्र का विधिवत उच्चारण किया, तत्पश्चात उन्होंने अपना सारगर्भित भाषण दिया। हम यहां उनके भाषण का उल्लेख या समीक्षा करना नहीं चाहते, अपितु उन्होंने गुरूकुल मन्त्र से गायत्री मन्त्र के शिक्षक गुरू महर्षि दयानन्द के संबंध में जो सत्य घटना सुनाई, उससे उपस्थित सभी श्रोतागण भाव–विभोर हो उठे।

पं. मोतीलाल नेहरू ने एक अति महत्वपूर्ण रहस्य का उदघाटन किया। उन्होंने कहा –

यह बात उन दिनों की है, जब महर्षि दयानन्द आगरा में एक महाविद्यालय के निकट प्रांगण में स्थित बगीचे में ठहरे हुए थे। हम 15–20 युवक प्रतिदिन दोपहर पश्चात फुटबॉल खेलने जाया करते थे। सायंकाल खेल समाप्ति के पश्चात एक दिन मैं अपने कुछ साथियों के साथ बगीचे में ठहरे, सन्त (महर्षि दयानन्द) की कुटिया चला गया और श्रद्धा सहित प्रणाम कर सामने बैठ गया। हमारे आगमन की सूचना पाकर स्वामी जी भी बाहर रखे तख्त पर आकर विराजमान हो गये। हम सब लोगों ने उनसे कुछ उपदेश देने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा – मैं उपदेश देने के पूर्व आप लोगों से कुछ चर्चा करना चाहता हूं। युवकों के समूह में मैं ही सबेसे आगे बैठा था। स्वामीजी ने मेरा नाम, धाम और काम पूछा। मैंने सब कुछ सही–सही बता दिया। उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा –

युवक तुम ब्राह्मण बालक प्रतीत होते हो ?

मैंने कहा – हां स्वामी जी, मैं कश्मीरी ब्राह्मण हूं और यहां पढ़ने आया हूं।

स्वामी जी ने प्रतिप्रश्न किया – ब्राह्मण बालक होने के कारण क्या तुम्हें 'गायत्री मन्त्र' याद है ?

यह प्रश्न सुनकर मैं निरूत्तर हो गया। यद्यपि मेरा पूर्व में यज्ञोपवीत संस्कार हो चुका था और पुरोहित जी ने सम्भवतः गायत्री मन्त्र उच्चारित भी कराया था। किन्तु न तो मुझे याद रहा और न पुरोहितजी ने इसके विषय में कभी मुझसे पूछा।

स्वामीजी से नम्रमापूर्वक सिर झुकाते हुए शर्मीले ढ़ंग से कह दिया – नहीं, स्वामी जी मुझे गायत्री मन्त्र नहीं आता है। मैं पूरी तरह भूल गया हूं।

पूजनीय स्वामीजी यह सुनकर मुस्करा दिये। उन्होंने एकबार हम सब युवकों को दृष्टि भर कर देखा और फिर सोचा। उन्होंने मुझसे पूछा – क्या तुम गायत्री मन्त्र सीखना चाहते हो ? मैंने तत्काल उत्तर दिया हां, स्वामीजी महाराज, मुझे गायत्री मन्त्र की दीक्षा देने की कृपा करें। पं. मोतीलाल नेहरू यह कहते हुए श्रद्धावश थोड़े भावुक हो उठे। श्रद्धालु की भावना का सत्कार करते हुए उन्होंने आगे कहना शुरू किया। इसके पश्चात ऋषिवर दयानन्द ने मुझे पद्मासन लगा कर बैठने के लिए कहा, मैं तत्काल उचित आसन लगा कर उनके सम्मुख बैठ गया। स्वामीजी के मुख मण्डल का इतना तेज था कि उनसे ऑख से ऑख मिलाकर बैठना अति कठिन था। फिर उन्होंने मुझे नमस्ते की मुद्रा में नेत्र बन्द कर, दोनों हाथ जोड़कर ह्रदय के निकट लाने के लिए कहा। मेरे द्वारा यह सब करने के पश्चात ऋषि ने गायत्री मन्त्र धीरे–धीरे बोलकर उसे दोहराने के लिए कहा। मैंने वैसे ही किया। उन्होंने मुझे गायत्री मन्त्र के अर्थ को भी समझाया। मुझे स्मरण है मैं स्वामीजी के निकट लगातार 3–4 दिन तक आता रहा और उन्हें मौखिक रूप से गायत्री मन्त्र सुनाता रहा। मेरे इस कम का मेरे साथियों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। फिर एक दिन एकाएक स्वामीजी कहीं अन्य नगर हेतु प्रस्थान कर गये। इसलिए मैं महर्षि दयानन्द को अपना दीक्षा गुरू मानता हूं।

महर्षि दयानन्द और गायत्री मन्त्र की इस रहस्यपूर्ण बातों को सुनकर मंच पर उपस्थित सब विद्वान तथा विशाल जनसमुदाय के लोग जरा जोश में आये और उन सभी ने मिलकर महर्षि दयानन्द की जय का उद्घोष किया। इस उद्घोष लगाने वालों में पं. मोतीलाल नेहरू स्वयं भी थे।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द, गायत्री मन्त्र को सदैव अति महत्व दिया करते थे। किन्तु उसके चमत्कारवाद तथा किराये से जप अनुष्ठान कराये जाने का सदैव विरोध किया करते थे। उन्होंने अपने समस्त ग्रंथों में यत्र–तत्र प्रसंगानुसार गायत्री मन्त्र की व्याख्या की है। इन्हीं भावनाओं के अनुरूप आर्य समाज गायत्री मन्त्र को स्वीकार करता है, जो कि स्तुत्य है।

## अथर्ववेद की सूक्तियाँ

1. **तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।**
   उस सबसे महान प्रभु के लिए नमस्कार हो।

2. **तस्य ते भक्तिवांसः स्याम।**
   हे प्रभो ! हम तेरे सच्चे भक्त बनें।

3. **स नः पर्षदति द्विषः।**
   ईश्वर हमें द्वेष–भावों वा शत्रुओं से अलग रखे।

4. **स एष एक वृदेक एव।**
   वह ईश्वर निश्चय से एक ही है।

5. **संश्रुतेन गमेमहि।**
   हम वेद की आज्ञा के अनुसार चलने वाले हों।

6. **मा श्रुतेन विराधिषि।**
   मैं कभी वेद–शास्त्र से अलग न होऊं, उसके विपरीत न चलूं।

7. **स नो मुंचत्वहंसः।**
   वह प्रभु हमें पाप से छुड़ा देवे।

8. **तमेव विद्वान न विभाय मृत्याः।**
   आत्मा, वा परमात्मा को जानकर मनुष्य मौत से नहीं डरता।

# "वेद सुधा"

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

यजुर्वेद अध्याय 16 में 'रूद्र' शब्द को विस्तारपूर्वक समझाया गया है। 'रूद्रदेव' के विभिन्न रूपों का वर्णन है उन्हीं में से यहां कुछ अंश प्रस्तुत किया जाता है। रूद्र अनेक हैं यह द्यौ अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी पर विद्यमान हैं यजुर्वेद का यह अध्याय रूद्र अध्याय कहलाता है।

**"असंख्याता सहस्त्राणि ये रूद्राऽधि भूम्याम्।"** यजु. 16/54

**"अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽधि"** यजु. 16/55

इन रूद्रो के दो रूप हैं – 1. इनका जो कल्याणकारी रूप है, वह शिव कहलाता है। 2. और यही विनाशकारी रूप में रूद्र बन जाते हैं। इस त्रिगुणात्मक प्रकृति से उत्पन्न अर्थात इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ शिव और रूद्र है। सृष्टि रचयिता ईश्वर के भी यह नाम हैं किन्तु प्राकृतिक पदार्थों के भी है। जब मनुष्य सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ को ज्ञानपूर्वक समुचित रूप से उपयोग में लेता है तो वह रूप शिव हो जाता है, उसके लिए कल्याणकारी हो जाता है। किन्तु जब मनुष्य अज्ञान, अविद्या में फंसकर आसक्ति पूर्वक अनुचित अर्थात दुरूपयोग करता है तब वही पदार्थ रूद्र रूप से उसके लिए विनाशकारी हो जाता है।

**ओ३म् नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।**

– यजुर्वेद 19/1

अर्थ – हे शत्रुओं को रूलाने वाले, रोगों को नष्ट करने वाले, दुर्गुणों, पापवृत्तियों को भस्म करने वाले प्रभो। आपको हमारा नमस्कार हो।

जैसे – पहले कहा है कि रूद्र असंख्य हैं ईश्वर, राजा, वायु, औषधि, वृक्ष, वैद्य, ऋषि, अर्थात् वैज्ञानिक आदि मन्त्र में असंख्यों पदार्थों का नाम रूद्र बताया है।

यहां पर केवल हम इस सर्वनियन्ता सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही ग्रहण करते हैं जब हम कल्याण पथ पर चलते हुए आत्म चिन्तन करते हैं, प्रभु का ध्यान करते हैं। उस समय हमारे अन्दर जो उत्साह होता है, जो साहस की अनुभूति होती है तथा जो शक्ति मिलती है। वह ईश्वर की 'शिव' रूप शक्ति है उसी के माध्यम से मनुष्य मोक्ष मार्ग में गमन करता हुआ यात्रा पूरी कर पाता है अर्थात् शिवलोक (मुक्ति) में पहुंच जाता है।

और जब व्यक्ति रोग, शोक व्यसनों तथा वासना, काम, क्रोध आदि शत्रुओं के बीच घिर जाता है, जब मुसीबतों के समुद्र में डूबने लगता है। ऐसी स्थिति में सगे संबंधी, रिश्तेदार व सभी मित्र आदि जब मुंह मोड़ लेते हैं तब व्यक्ति कातर

दृष्टि से प्रभु की ओर निहारता है, ध्यान करता है। इस समय जो वैराग्य होता है विषयों के प्रति अनासक्ति हो जाती है, व्यसनों, दुर्गुणों का नाश हो जाता है। यह ईश्वरीय 'रूद्र' शक्ति के माध्यम से होता है और रूद्र शक्ति की सहायता से मनुष्य सब प्रकार की पाप वृत्तियों पर विजय पाकर विजेता बन जाता है। अपनी दुर्बलताओं का नाश करके आत्मबल प्राप्त कर लेता है। तब उस प्रभु 'रूद्र' की सहायता और सुरक्षा में चकवर्ती सम्राट के समान व्यक्ति स्वाभिमान से प्रकाशमान हो जाता है। कोई भी आसुरी शक्ति तिरछी नजर से देखने का साहस नहीं कर सकती। इसलिए हम सब प्रभु का ही आश्रय लेवें।

**सुरेशचन्द्र शास्त्री**
उपदेशक
म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

## हँसो और हँसाओ

एक बार एक अंग्रेज और एक हिन्दुस्तानी रेल की प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। अंग्रेजों को भारतीयों से नफरत प्रसिद्ध ही है। जब हिन्दुस्तानी सो गया तो अंग्रेज ने उसकी जूती उठा के फेंक दी। फिर अंग्रेज के सो जाने पर हिन्दुस्तानी ने उसका कोट उठाकर बाहर डाल दिया।

अंग्रेज ने जब हिन्दुस्तानी से पूछा कि मेरा कोट कहाँ गया, तो उसने चट से जवाब दिया। "तुम्हारा कोट हमारी जूती ढूँढ़ने गया है।"

0 0 0

कैदी जेलर से – आपके रहते हुए मुझ पर एक संकट है।
जेलर – मेरे रहते तुम्हें क्या संकट, कैसी विपत्ति ?
कैदी – यही कि भागने का रास्ता नहीं मिलता।

0 0 0

मुसाफिर – (एक मनुष्य से) क्यों भाई, यह रास्ता मेरे गाँव चला जाएगा ?
मनुष्य – भाई, रास्ता तो यहीं रह जाएगा, शायद तुम अपने गाँव को चले जाओ।

# प्रलय की प्रतीक्षा

विश्व बैठा है प्रतीक्षा में किसी ज्वालामुखी की,
जो प्रलय के रूप को साकार कर दे !
और मानव को धरातल से मिटाकर,
व्योम वायु में विषैली गन्ध भर दे।
ताकि कुछ बच भी गये तो,
कैंचुए जैसी मनुज की सन्तति हो।
अंग–भंग, कुरंग सा अवशिष्ट मानव,
और पक्षी एक पंख विहीन होकर, अधजले निज लोथड़े की
इस मनुज की कूरता में आहुति देकर प्रभु से जा कहे–
ले देख ! तेरी श्रेष्ठ रचना के कर्म कितने घृणित हैं ?
क्यों कर रहा है आज मानव व्यग्रता से यह प्रतीक्षा ?
जापान से पूछो प्रथम जाकर, हृदय में फिर करो इसकी समीक्षा। क्योंकि
भारत का महाभारत सहस्त्रों वर्षों में अनूभूतियों को खो चुका है।
कट गया दुर्भाग्यवश इतिहास से ये
कर रहा है फिर वही, जिस पर कभी ये रो चुका है।
व्यथित है जन–जन यहां, हर प्राण में पीड़ा हिलोरे ले रही है।
फिर न जाने क्यों–किसी व्यामोह या दुश्चक्र में फंसकर उधर ही जा रहा है !
वातावरण में वेदना बिखरी पड़ी है,
और कण–कण में यहां करूणा सिसकती।
मानव हुआ संवेदन से मुक्त निष्ठुर–
आग पर चल कर शान्ति चाहता है।।
बढ़ता हुआ हर कदम लावा में धधकता,
मालवी–वृत्ति दहाड़ें मार कर रोती, हृदय बाहर निकलना चाहता है।
विकराला सा यह तप्त लावा भी जहां से भागता है–
क्यों वहां जा शीलता का यह प्रवर्तक ?
शान्ति के लिए पिघलना चाहता है।।
ऐ पथिक। चल लौट चल –
मतकर प्रतीक्षा तू किसी ज्वालामुखी की।
तू निवासी है ऋषियों की पुण्य भू का, आ इधर तुझको हिमालय टेरता है।
गंग की पावन तरंगें, गिरि–गुफाएँ और जल से उभरती चट्टान
कोई – भव्य आसन हो तेरा।
कल–कल मधुर संगीत तेरे ध्यान में सहयोग देगा।

शान्ति। चिर शान्ति।। निस्तब्धता।।।

दीर्घ श्वांसों में सुगन्धित, जल–छुई शीतल हवाएँ।
फैंफड़ों में संग्रहित लावा–कणों को शमित कर
चिर शान्ति की थिर कामना तुझमें भरेगें।
उग्रताओं से ज्वलित अन्तःकरण में शान्ति का आव्हान कैसा ?
निश्चलत्व विहीन चित्त में, शान्ति की है कामना ज्यौं–
दौड़ती जलधार में प्रतिबिम्ब पाना।।

आ मुझे पथ है बनाना–
मनुजता चिर शान्ति हित व्याकुल छटपटाती तेरे पीछे खड़ी है।
उस प्रभु न कर तेरा विश्वास,
अपना प्रतिनिधि तुझको चुना है।
वेद ईश्वर ने किया तुझको समर्पित, विश्व न यह तेरे श्री मुख से सुना है।।

लाज रख ओ परम् पिता के ज्येष्ठ सुत–
उसने तुझे दायित्व के संगदक्षता, सामर्थ्य, शक्ति विपुल दी है।
हो जा खड़ा – है ज्वार–भाटा पॉव तेरे–
विज्ञान है सेवक–पराक्रम पुत्र तेरा–
और यह ज्वालामुखी ललकार तेरी छिपी है।।
तेरा प्रमाद विनाश जग का है कहीं भी देख ले तू–
ज्वालामुखी की यह प्रतीक्षा है ज्वलन्त प्रमाण इसका।।

उठ। खड़ा हो – छोड़ दे वरूणास्त्र नभ में–
हिमकणी शीतल विचारों की फुहारें सर्वनाशिनी आग को–
कर राख दें कुछ ही पलों में।।
फिर नया–नूतन वसन्त दिगन्त के नव पल्लवों में महकता–
निज सौम्यता का दे मधुर आभास–
प्राणीमात्र के प्राणों को पोषित कर मही–मण्डल को तापविहीन कर दे।

हॉ। शेष अग्नि तो रहे–
यज्ञकुण्ड़ों में हवि से युक्त लपटें–
रोगनाशक, पुष्टिदायक पंचदेव प्रसन्न हों।
ये विश्व फिर वैदिक व्यवस्था के तले–
चिर शान्ति को, मुक्ति के सुख को प्राप्त कर समवेत् स्वर में–
विश्व–गुरू के सामने श्रद्धावनत् हो।
विश्व–गुरू के सामने श्रद्धावनत् हो।

गतांक से आगे ..........

# चिन्ता का ईलाज

– स्वेट मार्डन

देखा जाए तो चिन्ता पागलपन का ही दूसरा रूप है। मन की कोई व्यवस्था इतनी हानिकारक नहीं, जितनी चिन्ता की। व्यक्तिगत उन्नति, आनन्द व उपयोगिता को नष्ट करने वाला चिन्ता से बढ़कर कोई शत्रु नहीं। इस बुराई या रोग का इलाज यह है कि अपनी इच्छा शक्ति का इस तरह का अभ्यास डाला जाय कि वह चिन्ता दूर हटती रहे। काम–धन्धे में परिवर्तन करने से भी इसका इलाज सम्भव है। ज्योंही मस्तिष्क के विषय में प्रकृति की ओर से पहली चेतावनी मिले, त्योंही इसका इलाज करने की कोशिश करनी चाहिये। विश्राम चिन्ता का सबसे बड़ा और निश्चित शत्रु है। मनुष्य के लिए सबसे अधिक स्वास्थ्यकारक आदर्श वाक्य है। **"परवाह मत करो"**।

आज के युग में चिन्ता करना पिछड़ेपन की निशानी है। पहले–पहल वाष्प इंजन बना था, तब नब्बे प्रतिशत शक्ति बेकार चली जाती थी, केवल दस प्रतिशत उपयोग में आती थी। और धीरे–धीरे इंजन में सुधार करते–करते आज बिजली का ऐसा इंजन बन चुका है, नब्बे प्रतिशत शक्ति का उपयोग करता है और केवल दस प्रतिशत शक्ति बेकार जाती है। कुछ लोग अपनी शक्तियोंका महत्वपूर्ण प्रतिशत भाग व्यर्थ खो देते हैं। वे व्यर्थ की चिन्ता में, शिकायतों में, मौसम की खराबी के दुःख में अपनी शक्ति का बहुत बड़ा भाग व्यर्थ गंवा देते हैं। परन्तु जो समझदार हैं, वह अपनी प्रायः सारी शक्ति को कार्य में बदल डालते हैं, इससे उनका चरित्र चमक उठता है। जिसे जीने की कला की सच्ची शिक्षा मिल चुकी है, वह अपनी शक्तियों को विघटन में नहीं गंवायेगा, क्योंकि चिन्ता अर्थात् विघटन की यह प्रक्रिया जीवन की मशीन की तोड़ने–फोड़ने के सिवा और कोई काम नहीं करती।

एक अभिनेत्री ने एक बार कहा था – **चिन्ता हर प्रकार की सुन्दरता की शत्रु है**। पर उसे यह भी कहना चाहिये था कि वह **"हर प्रकार के स्वास्थ्य की शत्रु है।**

एक माता ने एक बार यह बात कही थी कि यदि मैं अपने बच्चों की चिन्ता न करूं तो यह हृदय हीनता मालूम होती है। यह ठीक है कि स्त्रियां अपने बच्चों को बड़े कष्टों और चिन्ताओं से पालती हैं, किन्तु समस्या तो तब उठ खड़ी होती है जब अपनी समस्याओं और कष्टों को भी चिन्ताओं की तरह ही पालने लगती हैं। लेडी हालैण्ड का कथन है कि पालने से कष्ट और चिन्तायें बड़े हो जाते हैं। एक गौरा लॉर्ड सफर में अपने साथ चूहों का पिंजरा रखा करता था, जिससे रास्ते में उसे चूहे न तंग करें। जो लोग इस प्रकार अपने सिर पर कष्टों की चिन्ता का बोझ लादे फिरते हैं, वे उसी लॉर्ड की तरह हैं।

सेने का कथन है – जो समय से पहले चिन्ता करता है आवश्यकता से अधिक चिन्ता करता है।

एक मनुष्य ने मरने से पूर्व कहा था – "मेरे बच्चों ! लम्बी आयु में, लम्बे जीवन में, मुझे कई बड़े–बड़े कष्ट आये, पर कष्ट मुझे कभी दुबारा नहीं हुए।

फिलाडेल्फिया के एक प्रसिद्ध व्यापारी का कहना था कि उसके पिता पच्चीस वर्ष तक एक मुसीबत की चिन्ता करते रहे पर वास्तव में मुसीबत कभी आई ही नहीं।

हम जीवन के बहुत अधिक भाग को एकदम मुट्ठी में कर लेने का यत्न करते हैं, क्योंकि हम सारे जीवन को एक ही समझते हैं, पर वास्तविकता यह है कि हम एक ही दिन सम्पूर्ण जीवन व्यतीत नहीं करते। जीवन एक मीनाकारी है, जिसमें एक मणि के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी अर्थात् अनेक मणियां अलग–अलग जड़ी जानी चाहिये।

यदि एक घड़ी का वर्षभर का समय जोड़कर उस पर लिख दिया जाये और उसे बन्द कर दिया जाये तो वह घड़ी घड़ी नहीं रह जाती। आज के कष्ट हमें दुःख नहीं देते, बल्कि कल के, आने वाले सप्ताह के और आगामी वर्ष के सम्भावित कष्ट हमारे बालों को सफेद करते हैं। हमारे चेहरे पर झुर्रियां डालते हैं और हमारी गति को रोक देते हैं।

वर्तमान के कष्ट से शायद कभी ही स्त्रायु–कष्ट होता होगा, परन्तु आने वाले कष्टों वा संकटों की आशंका और चिन्ता से अवश्य होता है। जो बहुत दूर की चिन्ता करते हैं, उनका मस्तिष्क थक जाता है। वे पहाड़ी के पास पहुंचने से पहले ही उस पर चढ़ाई करना शुरू कर देते हैं। आज की उन्नति में वे चिन्ता द्वारा जान बूझकर एक बाधक दीवार खड़ी कर देते हैं। वे बन्धन में बन्धकर जीवन बिताते हैं। हो सकता है भूतकाल में कठिनाईयां रही हों, खेद रहे हों, पर उनकी याद से क्या लाभ ? वे तो बीत चुके हैं। अनदेखी मुसीबतों की चिन्ता करने की अपेक्षा क्यों न अपने वर्तमान सुख पर आनन्द मनाया जाय ? क्यों न इसके विपरीत अपनी आत्मा को आने वाले सुखों और हर्षों के विचार से आनन्दित किया जाय ? इमर्सन का कहना है – मैं भविष्य के विचारों के महलों से आनन्द मनाता हूं क्यों इससे मुझे आराम मिलता है। मैं यह कल्पना नहीं करता कि मुझे भविष्य में रहना पड़ेगा। नित्य चिन्ता द्वारा गड्ढ़े खोदकर मैं अपने को दयनीय नहीं बनाना चाहता।

यह संसार कैसा है ? जैसा आप इसे समझें। थैकरे का कथन है कि **"यह संसार एक दर्पण के समान है। जैसा आपका मुंह होगा, वैसा ही प्रतिबिम्ब दिखाई देगा।** आप मनहूस चेहरा बनाये रखेगे तो संसार आपको मनहूस एवं आनन्द हीन दिखाई देगा।

**कमशः ............**

बोध कथा –

# सच्चे गुरू की पहचान

भक्त दादू महाराज एक नगर के बाहर रहते थे। भक्ति से भरे गीत गाते। कोई आ जाय तो उसे भक्ति का उपदेश देते। स्थान–स्थान पर उनकी प्रसिद्धि होने लगीं, शहर में भी पहुंची। शहर के कोतवाल भक्ति की बातों में कुछ–कुछ रूचि रखते थे। घोड़े पर बैठे, शहर से चल पड़े कि दादू महाराज के दर्शन कर आयें, उनसे भक्ति का अमृत ले आये। परन्तु भक्ति में रूचि रखते हुए भी थे तो वे कोतवाल हो। शहर से बाहर जंगल में पहुंचे। दूर तक चले गये। कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। तभी एक व्यक्ति दिखाई दिया।वह मार्गमें लगी कांटेंदार झााड़ियों को काटकर सड़क साफ़ कर रहा था। कोतवाल ने रोब से पूछा – "ए ! तू जानता है कि महात्मा दादू कहां रहते हैं ?"

वह व्यक्ति कार्य में मस्त था, बोला नहीं। कोतवाल क्रुद्ध हो गए। गाली देते हुए बोले – मैं तेरे बाप का नौकर नहीं। शहर का कोतवाल हूं। जल्दी बोल।

उस व्यक्ति ने अबकी बार सुना, आश्चर्य से कोतवाल की ओर देखा, धीरे से मुस्करा दिया। कोतवाल ने समझा कि यह व्यक्ति ठट्टा कर रहा है। जिस चाबुक से घोड़े को चला रहे थे, उसी से उस व्यक्ति को पीट डाला। वह व्यक्ति चाबुक खाता रहा, फिर भी मुस्कुराता रहा। कोतवाल ने उसे जोर से धक्का दिया। वह व्यक्ति पत्थर पर गिरा। उसके सिर से रक्त बहने लगा। कोतवाल जल्दी में थे। उसे वैसे ही छोड़कर आगे चल दिये। कुछ दूरी पर जाकर एक और व्यक्ति दूसरी ओर जाता हुआ मिला। उससे बोले – "दादू महाराज कहां मिलेगें ? तू जानता है?"

उस व्यक्ति ने कहा – "दादू महाराज तो इसी मार्ग में थे। अभी कुछ देर पूर्व मैं उन्हें देखकर आया हूँ। वे मार्ग में लगी कॉटेदार झाड़ियों को काट रहे थे। क्या आपने उन्हें नहीं देखा ?"

कोतवाल ने आश्चर्य से कहा – वे दादू थे ?

पथिक ने कहा – हॉ।

कोतवाल घोड़े को मोड़कर दौड़ाते हुए वापस आये। देखा कि दादू ने अपने सिर पर पट्टी बॉध ली है। वैसे ही झॉड़ियां काट रहे थे। कोतवाल शीघ्रता के साथ घोड़े से उतरे। दादू के चरणों में गिर पड़े। रोते हुए बोले – क्षमा कर दो महात्मन्। मैं तो आप ही को खोजता फिरता था। मेरी बुद्धि पर परदा पड़ गया, आपको ही पीट ड़ाला। मुझे क्या पता था कि आप ही दादू भगत हैं। आप तो सड़क साफ कर रहे थे।

दादू मुस्कुराते हुए बोले – मैं सड़क ही तो साफ करता हूं। आत्म दर्शन को जाने वाली सड़क बिल्कुल सीधी है। इस पर जब काम, कोध, लोभ, मोह और अहंकार की कँटीली झाड़ें उग आती हैं, तब लोगों के लिए चलना कठिन हो जाता है। बहुत अधिक झाड़ें उग जायॅ तो मार्ग लुप्त हो जाता है। वह आध्यात्मिक संसार की बात है, यह भौतिक संसार की। इस सड़क पर झाड़–झंखाड़ बहुत हैं। उन्हें दूर कर रहा हूं, जिससे यात्रियों को कष्ट न हों।

कोतवाल ने दुःख के साथ कहा – परन्तु मैं जब आपसे पूछता रहा, तो आपने बताया क्यों नहीं कि आप ही दादू भगत हैं ? मुझे क्षमा कर दीजिए, मुझसे बहुत बड़ा पाप हो गया है।

दादू जोर से हंस पड़े, बोले – कुछ नहीं किया तुमने। एक व्यक्ति एक घड़ा खरीदता है तो उसे भी ठोक–पीटकर देख लेता है। तुम तो जीवन का मार्ग दिखाने वाले गुरू को खोज रहे थे। ठोक–पीटकर देख लिया तो हर्ज ही क्या हुआ ?

यह है गुरू का गुण। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जिसे आप गुरू बनाना चाहते हैं उसे पीटना शुरू कर दीजिये। ऐसा नहीं, उसके पास बैठकर यह देखिये कि उसे कोध आता है या नहीं। यदि कोध नहीं आता तो ठीक व्यक्ति है। उसे गुरू बनाओं, परन्तु होश से बनाओ, देख–भालकर बनाओ। (कोध न करना, धर्म का लक्षण है)

## सूचना

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल की अन्तरंग बैठक दिनांक 7 जून 2014 शविवार को प्रातः 11 बजे एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) दिनांक 8 जून 2014 रविवार को प्रातः 11 बजे आर्य समाज मन्दिर रेल्वे कॉलोनी, रतलाम में आयोजित की गई है। कृपया, पदाधिकारी, अन्तरंग सदस्य एवं साध ाारण सभा सदस्यगण आवश्य पधारे।

**प्रकाश आर्य**
सभामन्त्री

## भूल सुधार

गत अप्रेल माह 2014 के अंक में पृष्ठ कमांक 13 पर ''महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर राजस्थान सरकार की प्रशंसनीय पहल'' के सन्दर्भ से एक लेख प्रकाशित किया गया था जिसमें त्रुटिवश ''सार्वदेशिक सभा प्रधान सत्यव्रत सामवेदी'' छप गया था। यह त्रुटि अन्य पत्रिका में उल्लेखित समाचार के कारण से हुई। ''सार्वदेशिक सभा के प्रधान **आचार्य बलदेव जी**'' ही हैं।

**– सम्पादक**

# बाल सन्देश स्तंभ

प्रिय बच्चों,

आपको मालूम ही है कि वैदिक रवि के प्रत्येक अंक में "बाल सन्देश स्तंभ" आपके लिए ज्ञानवर्धक बातों का प्रकाशन हो रहा है।

आपको यह भी बताया गया था कि इसी स्तभ में से आपसे कुछ प्रश्न पूछे जावेगें, जिनका उत्तर आपको अपने ज्ञान से या पत्रिका को पढ़कर देना है।

सही उत्तर प्राप्त होने पर उनको एक साथ रखकर उनमें से लॉट्री की तरह कुछ उत्तरों को निकाला जावेगा। उन्हें पारितोषिक भी दिया जावेगा।

इसलिए वैदिक रवि के सभी स्तंभ जो 27 जून 2013 से प्रकाशित हुए उन्हें संभालकर एकत्रित करिए और जून माह के अंक तक पूछे गए प्रश्नों का उत्तर इसी पत्रिका में से शीघ्र देकर पारितोषिक प्राप्त करें।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों के नाम व उनके चित्र पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगें।

– तुम्हारी नीलू दीदी

## ईश्वर

प्र. 1 वेद कितने हैं ?

प्र. 2 वेद कौन–कौन से हैं ?

प्र. 3 वेदों में कुल कितने मन्त्र हैं ?

प्र. 4 ईश्वर ने वेद ज्ञान किसके लिए दिया ?

प्र. 5 वेदों का ज्ञान ईश्वर ने कब दिया ?

प्र. 6 वेदों का ज्ञान किसने दिया ?

प्र. 7 संसार में प्राचीनतम पुस्तक कौन सी है ?

प्र. 8 वेदों का ज्ञान ईश्वर ने कैसे दिया ?

प्र. 9 वेदों में ज्ञान कैसा है ?

प्र. 10 गायत्री मन्त्र की महिमा क्यों है ?

**उत्तर** –1. 4, 2. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। 3. 20379,
4. प्राणीमात्र के लिए 5. सृष्टि के आरम्भ में 6. ईश्वर
7. वेद 8. समाधी अवस्था में 9. इसमें अच्छी बुद्धि के लिए प्रार्थना है।
10. ओ भू भुर्वः .................

बच्चों और भी हमें कई प्रकार के लाभ है जिसके लिए हमें भगवान की भक्ति करनी चाहिए।
वो क्या है ?
जैसे हम कूलर या पंखे के पास जाते हैं तो उसकी ठण्डी हवा हमें मिलती है कि नहीं ?
मिलती है।
वैसे ही हम किसी जलती हुई आग के पास जाऐ तो गर्मी लगती है या नहीं ?
लगती है।
इसी प्रकार किसी फूलों के ढेर के पास जाने पर उसकी सुगन्ध और नाली के पास जाने पर दुर्गन्ध आती है या नहीं ?
आती है।

इसका मतलब यह है कि हम जिसके पास जायेंगे उसका हम पर असर होता है...एक बात और है कोई...
...व्यक्ति किसी गलत आदमी के साथ रहें जिसकी आदतें ठीक नहीं है, तो उसके साथ रहने पर जिसमें बुरी आदते हैं, उसका असर होगा या नहीं ?
होगा।
दादाजी ने अपूर्वा से पूछा—
फिर बुरे आदमी का संग करने से अच्छी आदतें आयेगी या बुरी ?
बुरी आदतें आयेगीं।
और अच्छे आदमी का संग करने से केसी आदतें आयेंगी ?
अच्छी आदतें।

# समाचार

## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2014 का दो देशों में आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सन् 2006 से प्रतिवर्ष अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाता है उसी श्रृंखला में अभी तक 7 सम्मेलन सम्मन्न हो चुके हैं जिनमें से पांच अमेरिका, मॉरिशस, सूरीनाम, हालैण्ड एवं दक्षिण अफ्रिका में तथा दो भारत वर्ष में हो चुके हैं। आगामी महासम्मेन सिंगापुर में एक एवं दो नवम्बर को तथा थाईलैण्ड (बैंकॉक) मे 8–9 नव. को होना निश्चित हुआ है। इस हेतु सभा की ओर से उक्त दोनों देशों में जाकर कार्यकम निधारित किया गया है। कार्यक्रम में भाग लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति अभी से अपना नामांकन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कैम्प कार्यालय 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 अथवा श्री आर्य सुरेचन्द्र अग्रवाल 12, किसेन्ट, थलतेज हाईवे, अहमदाबाद पर अथवा मेरे पते पर प्रषित करें ताकि आगे की व्यवस्था में सुविधा हो।

**प्रकाश आर्य**
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

## ओउम् मय हुआ आर्य समाज देहरी परिक्षेत्र

महर्षि आर्य समाज देहरी (मन्दसौर)। आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती रेशमकुंवर आर्या के सानिध्य में वेद प्रचार सहयोगी सदस्यों के सहयोग से सृष्टि सम्वतसर व विक्रम संवत् 2071 की अगवानी पर आर्य समाज देहरी गांव के अतिरिक्त सीमावर्ती गांव मजेसरा, मजेसरी, रीक्षलालमुंहा, निम्बोद, खजुरिया सारंग, खोड़ाना, चांदाखेड़ी, सगवाली, गरोड़ा, आकोदड़ा, ताजखेड़ी आदि के साथ दूरंदराज के गांव विसलवाल कलां (नीमच), पहुंना (चित्तोड़गढ़), गरदोड़ी (प्रतापगढ़), खरसौद कलां (उज्जैन), लसूड़िया (गरोठ), भाटखेड़ी (मनासा), रहाना, गुराड़िया देदा, कर्नाखेड़ी, नन्दावता, नगरी, रणायरा (रतलाम) आदि स्थानों पर बड़े आकार में ओउम् के 250 ध्वज व सम्वत्सर की महत्ता व अगवानी की विधि के 500 पत्र नवसम्वत्सर की अगवानी के पूर्व ही वितरित किये गये, जिससे नववर्ष की प्रतिपदा पर ही आर्य समाज देहरी परिक्षेत्र ओउम् मय हो गया है। इन गतिविधियों के साथ आगामी आषाढ़ (शुदि) मास गुरूपूर्णिमा पर वृहद वैदिक यज्ञ के साथ सभी वर्गों के वृद्ध, अतिवृद्ध, विशिष्ट जनों का पॉचवां सम्मान व दन्तरोग, नेत्र परिक्षण व लैंस प्रत्यारोपण आदि स्वास्थ शिविर का आयोजन भी किया जावेगा।

# आदिवासी क्षेत्र में शराब, मांस आदि का त्याग

आदिवासी क्षेत्र में सभा प्रचारक श्री सुरेश शास्त्री, श्री सुरेश आर्य एवं श्री खेमचन्दजी द्वारा सघन प्रचार किया गया।

माह अप्रेल में सभा की ओर से सभा के उपदेशक श्री सुरेश शास्त्री, श्री सुरेश आर्य एवं श्री खेमचन्दजी द्वारा नवापाड़ा कालीरूण्डी, काकरेस तह. थान्दला, शुजापुर, जामदा झाबुआ, भीमकुण्ड, फलिया, हेड़ावा, मैलपाड़ा, बड़ा नाहरपुरा आदि स्थानों पर यज्ञ एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। इससे प्रभावित होकर सैकड़ों लोगों ने शराब और मांस का त्याग करने का संकल्प लिया।

इससे लोगों में जाग्रति आई और पुनः वेद रथ के साथ आमन्त्रित किया।

# यज्ञ एवं संस्कारों से वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज पीपल्यामण्डी के पुरोहित सत्येन्द्र जी आर्य ने समूचे अंचल में वैदिक पद्धति से विवाह नामकरण सीमान्सनयन, मुंडन, यज्ञोपवीत तथा अन्त्येष्टि आदि संस्कारों को करा रहे हैं। मुख्यमन्त्री कन्यादान योजना से लेकर कई समाजों में आयोजित सामुहिक विवाह संस्कार एवं यज्ञ करा रहे हैं। महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से जहां अविद्या, पाखण्ड बहु देवतावाद के चंगुल से निकालकर पावन वेद ज्ञान से सुचारू कराया जाता है वहां संस्कार विधि अनूठे रत्न से आत्मा को सुसंस्कृत एवं मलीनता युक्त मन की प्राप्ति होती है। 27/5/2014 को मन्दसौर में गुजराती लोहार समाज के 35 जोड़ों एवं गांव कर्जाड़ा (नीमच) में 31 जोड़ों का विवाह 20/5/2014 को वैदिक पद्धति से कराया। जिसकी सभी ने सराहना की। आर्य समाज बूढ़ा, टकरावद, नेनोरा, खेड़ाखदान, पीपल्यामण्डी का विशेष सहयोग रहा तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य एवं वैदिक संसार पत्रिका के क्षेत्रिय प्रतिनिधि श्री बंशीलाल आर्य ने उक्त आयोजनों मे विशेष सहयोग दिया।

समाचार

## प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर प्रारंभ

## समय की पाबंदी एवं श्रेष्ठ पुरुषों का निर्माण होता है शिविर से

– प्रकाश आर्य

### डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती के निर्देशन में 10 शिक्षकों द्वारा शिविर सम्पन्न

उज्जैन में 12 वर्षो बाद पुनः प्रान्तीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बच्चे समय पर उठाकर स्वयं अपना सम्पूर्ण कार्य करके स्वावलंबी बनते हैं। उनमें मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक रक्षा–विकास एवं आत्मरक्षा व चरित्र निर्माण तथा राष्ट्र रक्षा के गुणों को सिखाया जाता है। मुख्य अतिथि श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, प्रधान म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल व श्री प्रकाश आर्य, सभा मन्त्री दिल्ली की अध्यक्षता में शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ किया।

इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में श्री राजेन्द्र व्यास, समाजसेवी श्री राधेश्याम बियाणी, वरिष्ठ पत्रकार श्री रामलाल प्रजापति, श्रीधर गोस्वामी थे।

शिविर का संचालन आर्य वीर दल म. प्र. के प्रांतीय संचालक श्री दिनेश वाजपेयी ने किया व आभार शिविराध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार ने माना। इस अवसर पर सर्वश्री जगन्नाथसिंह आर्य, रामकिशोर कासदे, रेवाशंकर चौधरी, वेदप्रकाश आर्य, काशीराम आर्य, भेरोसिंह आर्य, प्रधान व्यायाम शिक्षक के साथ ही शिक्षक प्रशिक्षक थे। शिविर 15 मई से 22 मई तक आयोजित किया, जिसमें 15 जिलों उज्जैन, आगर, शाजापुर, इन्दौर, नीमच, सीहोर, बड़वानी, भोपाल, विदिशा, खरगौन, रतलाम, झालावाड़ (राजस्थान) आदि स्थानों के लगभग 150 शिविरार्थियों को प्रशिक्षण व्यायाम बौद्धिक एवं अन्य जीवन निर्माण के गुर सिखायें।

शिक्षक डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल के मार्गदर्शन में दस व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण दे रहे हैं। शिविर मनुष्य के जीवन का निर्माण करता है। शिविर में रहकर बच्चे अनुशासित व समय पर कार्य करना सीखते हैं। शिविर में स्वयं स्वामी देवव्रतजी द्वारा विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर व्यायाम शिक्षक और नायक बनेगें।

आगामी माह राष्ट्रीय शिविर हरिद्वार में आयोजित है। इस शिविर में से लगभग 25 आर्यवीर नवयुवकों का चयन उस शिविर हेतु किया गया है।

आर्य वीरों को बौद्धिक प्रशिक्षण के लिए स्वामी जी के अतिरिक्त श्री प्रकाश आर्य, श्री दक्षदेव गौड़, श्री राजेन्द्र व्यास, श्री दिनेश वाजपेयी ने भी प्रशिक्षण दिया। समापन के अवसर पर शिविर में भाग लेने वाले आर्य वीरों ने प्रदर्शन किया, उनकी बौद्धिक परीक्षा ली गई, उत्तीर्ण छात्रों को पारितोषिक दिया गया।

समापन कार्यकम के अवसर पर मध्यप्रदेश शासन के शिक्षा मंत्री पारस जैन, उज्जैन नगर निगम के अध्यक्ष सोनू गहलोत, स्वामी ऋतस्पति जी होशंगाबाद ने उपस्थित होकर पुरस्कार वितरण किया व आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर प्रदेश व सावदेशिक आर्यवीर दल के पदाधिकारियों ने श्री भेरूसिंह जी को प्रांतीय आर्यवीर दल मंत्री और दक्षदेव गौड़ को प्रांतीय बौद्धिक अध्यक्ष मनोनीत किया। कार्यक्रम को श्री स्वामी देवव्रत जी, श्री प्रकाश आर्य, श्री दिनेश वाजपेयी, श्री राधेश्याम बियाणी, श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार, श्री वेदप्रकाश आर्य ने संबोधित किया।

# आर्य समाज शिवपुरी में प्रचार–प्रसार का अनोखा प्रयास (अतिथि यज्ञ)

आर्य समाज शिवपुरी में वेद कथा का अनोखा दूसरा प्रयास बड़ा ही सुखद रहा, प्रथम कुछ वर्ष पूर्व श्री समीर गांधी जी ने, द्वितीय श्री इन्द्रजीत चावला जी ने कराया। प्रथमबार श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के ब्रह्मत्व में, दूसरा कु. अंजलीजी आर्या के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। शिवपुरी शहर के श्रोताओं ने इस कार्यक्रम को बहुत सराहा।

प्रथम श्री समीर गांधीजी ने निश्चय किया कि पूरे वर्ष की एकत्रित अतिथि यज्ञ की धन राशि से आर्य समाज में वेद विद्वान को बुलाकर वेद कथा करवाकर अतिथि यज्ञ कराया जाए, वह काफी सफल रहा था।

उसी की प्रेरणा लेकर दिनांक 24/4/2014 से दिनांक 27/4/2014 तक अतिथि यज्ञ श्री इन्द्रजीत चावला जी ने कराया, जिसको सफल बनाने में श्री समीर गांधी की पूरी भूमिका रही। इस कार्यक्रम से आर्य समाज शिवपुरी के युवा सदस्यों एवं नये युवा सदस्यों में प्रेरणा का संचार हुआ।

---

# मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा संभाग गुना का संभागीय सम्मेलन

दिनांक 27/4/2014 शनिवार को आर्य समाज शिवपुरी में गुना संभा का आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें शिवपुरी, गुना, अशोक नगर, श्योरपुर जिले के 32 पदाधिकारीगणों ने भाग लिया।

सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश जी गांधी के मार्गदर्शन में सम्मेलन की कार्यवाही प्रारंभ की गई। आये हुए सभी सज्जनों ने परिचय उपरान्त अपने–अपने आर्य समाज की गतिविधि एवं प्रचार–प्रसार के बारे में बताया।

इसके बाद श्री समीर गांधी ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति में गति देने हेतु उदबोधन दिया, जिसको सभी ने सराहा एवं आर्य समाज गुना के प्रधानजी ने गुना आने का निमन्त्रण दिया।

अन्त में सभा प्रधानजी ने सभी समाजों से अपेक्षा की कि आर्य समाज के प्रचार–प्रसार, सत्संग, उपस्थिति में गति देवें एवं अपनी समाज में प्रतिनिधि सभा के प्रचारक हेतु समय, दिनों हेतु प्रोग्राम बनाकर देवें, जिससे प्रचारक की व्यवस्था कर भेजा जा सकें। शान्ति पाठ के बाद सम्मेलन समाप्त किया गया।

# आर्य युवक–युवती सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का द्वितीय आर्य युवक–युवती सम्मेलन 15 जून 2014 को पुनः आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज, इन्दौर में आयोजित किया गया है।

आर्य समाज में परिवारों की वृद्धि के लिए आर्य विचारधारा के नवयुवकों, युवतियों में संबंध होना बहुत आवश्यक व महत्वपूर्ण हैं। इस प्रयास का लाभ भी प्राप्त हो रहा है।

अतः इच्छुक नवयुवक–युवती का अभिभाषक यथाशीघ्र सम्पर्क करें।

इस हेतु युवक–युवती की पूर्ण जानकारी आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर के पते पर प्रेषित करें।

जिसमें – नाम, फोटू, आयु (जन्म तारीख), ऊँचाई, वजन, रंग, शिक्षा, पारीवारिक जानकारी, परिवार या स्वयं के संबंध में कोई विशेष जानकारी, साथ ही 200/– का चैक या नकद प्रेषित करें। पूर्ण पता, मोबाईल नं., दूरभाष नं. भी लिखें।

15 जून के पूर्व सभी प्रतिनिधियों के विवरण सहित पुस्तिका आप तक पहुंचा दी जावेगी।

सम्पर्क करें –

**श्री इन्द्रप्रकाश गांधी**
प्रधान
म. भा. आर्य प्रति. सभा
मोबा. 9425137097

**अर्जुनदेव चढ्ढ़ा**
राष्ट्रीय संयोजक
मोबा. 9414187428

**प्रकाश आर्य**
सभामन्त्री
सार्व. आर्य प्रति. सभा,
मोबा. 9826655117

**गोविन्द आर्य**
उपप्रधान
इन्दौर संभाग
मोबा. 9424012471

**दक्षदेव गौड़**
उपमन्त्री
इन्दौर संभाग
मोबा. 9425907070

# वेद रथ प्रचार हेतु बुलावें।

30 जनवरी के पश्चात वेद रथ जिसमें साहित्य, भजन, गायन, ध्वनि प्रसारण यन्त्र, वैदिक सिद्धान्तों की फिल्म दिखाने हेतु प्रोजेक्टर भी है। अपने यहां आमन्त्रित कर सकते हैं।

**सम्पर्क :**

गोविन्द आर्य "प्रधान"
मोबा. 9424012471

रमेशचन्द्र गोयल "मंत्री"
मोबा. 9098272064

# पुरोहित एवं उपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र का शीघ्र शुभारंभ

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से आर्य समाजों में पुरोहितों की कमी को देखते हुए नए पुरोहितों को प्रशिक्षण देकर पुरोहित की योग्यता प्रदान करना तथा प्रान्तीय सभाओं में उपदेशकों की नियुक्ति करने हेतु उपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना बहुत शीघ्र की जा रही है। यद्धपि सम्पूर्ण व्यवस्था को एक नई गति देने के लिए 200 करोड़ रूपए की पूर्व में योजना बनी है। जिसमें अनेक विभाग प्रारंभ होकर वैदिक मिशन के कार्य को विश्व स्तर पर संचालित करेगें। उस कार्य को प्रारंभ होने में कुछ समय लगेगा, इसलिए आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए इस प्रकार की योजना बनी है ताकि यथाशीघ्र पुरोहित और उपदेशकों की कमी को पूरा करने की ओर प्रयत्न प्रारंभ हो सकें। संभवतः यह प्रशिक्षण कार्य आगामी दो–तीन माह में प्रारंभ हो जाएगा। इस हेतु गुरूकुल होशंगाबाद का चयन किया गया है।

प्रशिक्षण केन्द्र में 12 से 15 माह का प्रशिक्षण देकर परीक्षाएं ली जाएंगी। इस हेतु पुरोहित एवं उपदेशक योग्यता हेतु पाठ्यकम भी निश्चित किया जा रहा है। इसमें प्रवेश हेतु कम से कम स्नातक अथवा शास्त्री होना आवश्यक है। प्रशिक्षण गुरूकुल के आचार्य स्वामी ऋतस्पति जी एवं अन्य आचार्यगण तथा आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान प्रदान करेगें। परीक्षा उत्तीर्ण होने पर तत्काल उनकी नियुक्ति आर्य समाजों मे पुरोहित के स्थान पर और सार्वदेशिक सभा की ओर से उपदेशक के रूप में की जाएगी। प्रशिक्षण निःशुल्क रहेगा। रहने, खाने के अतिरिक्त उचित राशि भी प्रदान की जाएगी।

आर्यजनों से निवेदन है कि इस हेतु इच्छुक व्यक्ति अपने आवेदन मेरे पते (श्री प्रकाश आर्य समाज, लुनियापुरा, महू म.प्र.)या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा **कैम्प कार्यालय 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1** पर पूर्ण जानकारी के साथ प्रेषित करें।

**प्रिय पाठकवृन्द,**

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

**विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।**

॥ ओ३म् ॥
ISO 9001 Company with Export Excellence Award
sabar
साबर पम्पस्
एक नाम भरोसेमंद व लम्बी सेवा के लिये मशहूर
मोटर में EC ग्रेड शुद्ध कापर रोटर का कमाल
POWER SAVINGS GUIDE
SSR 503 (0.5 HP Die Cast Body 1440 RPM)
SLM 50 (0.5 HP)
SSM 50 (0.5 HP Speed Master)
विनसब ओपनवेल
50 Feet Pumps
V4 V5 V6
कम वोल्टेज में भी बढ़िया काम देता है।
3 Phase Horizontal Open Well Set (3 HP to 17.5 HP)
साफ पानी पिये और स्वस्थ रहें....
आपकी सेहत का रखे पूरा ध्यान
ULTRA
RO Water Purifying Systems
RO SYSTEM
40 वर्षों से आपकी सेवा में
जागृति
(राऊ वाले)
कम्पनी द्वारा अधिकृत विक्रेता:
सत्य इण्टरप्राईजेस
हेड ऑफिस : 17, क्षीर सागर, शॉपिंग काम्पलेक्स, उज्जैन फोन: 0734-2556173
ब्रांच ऑफिस : 144, चिमनगंज मण्डी, उज्जैन मोबाईल : 9425930484, 94259-15751

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

**मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा**

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू

AMIT # 98262-71062